

एकादशः पाठः

विद्याधनम्



न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि । व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।। 1 ।।

विद्या नाम नरस्य रूपमिधकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् विद्या भोगकरी यश: सुखकरी विद्या गुरूणां गुरु: । विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या-विहीन: पशु: ॥ 2 ॥

केयूरा: न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजा: । वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ 3 ॥

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयः धेनुः कामदुघा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा । सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम् तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु।। 4 ।।

🛶 शब्दार्थाः 🔶

| بالمانية افليتم عياسيال | didentity and address the | والطاعل الماسان الطالع |
|-------------------------|-----------------------------------|--------------------------|
| चौरहार्यम् - | चोरों के द्वारा चुराने योग्य | to be stolen by a thief |
| राजहार्यम् - | राजा के द्वारा छीनने योग्य | to be attacked by a king |
| भ्रातृभाज्यम् - | भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य | to be divided among |
| | | brothers |
| भारकारि - | भार बढ़ाने वाली | burden |
| प्रच्छन्नगुप्तम् - | अत्यन्त गुप्त | hidden |
| भोगकरी - | भोग का साधन उपलब्ध | giving objects of |
| | कराने वाली | pleasure |
| परा - | सबसे बड़ी | the greatest |
| राजसु - | राजाओं में | among kings |
| केयूराः - | बाजूबन्द | bracelets |
| चन्द्रोज्ज्वला - | चन्द्रमा के समान चमकदार | as bright as the moon |
| (चन्द्र+उज्ज्वला) | | |
| विलेपनम् - | शरीर पर लेप करने योग्य | anointing |
| | सुगन्धित-द्रव्य (चन्दन, केसर आदि) | |
| नालङ्कृता – | नहीं सजाया हुआ | undecorated |
| (न+अलङ्कृता) | | |
| मूर्धजाः | वेणी, चोटी | plait (hair) |
| वाण्येका (वाणी+एका) - | एकमात्र वाणी | speech alone |
| समलङ्करोति - | अच्छी तरह सुशोभित करती है | decorates |
| संस्कृता - | संस्कारयुक्त (परिष्कृत) | well cultured |
| धार्यते - | धारण की जाती है | is borne |
| क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि | - सम्पूर्ण आभूषण नष्ट | all ornaments perish |
| (क्षीयन्ते+अखिलभूषणानि | हो जाते हैं | |

60

- अच्छे दिन बीत जाने पर भाग्यक्षये when good days end helper आश्रय: सहारा - इच्छानुसर फल देने वाली कामदुघा yielding all desired objects - सम्मान का केन्द्र या समूह सत्कारायतनम् storehouse of respects रत्नैर्विना - रत्नों से रहित without jewells - विद्या पर अधिकार विद्याधिकारम् mastery over learning - अतः दूसरे सबको छोड़कर therefore giving up तस्मादन्यमुपेक्ष्य (तस्मात्+अन्यम्+उपेक्ष्य) others



| 1. | उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुपयुक्तकथनानां समक्षं | 'न' इति लिखत- |
|----|---|---------------|
| | (क) विद्या राजसु पूज्यते। | |
| | (ख) वाग्भूषणं भूषणं न। | |
| | (ग) विद्याधनं सर्वधनेषु प्रधानम्। | |
| | (घ) विदेशगमने विद्या बन्धुजन: न भवति। | |
| | (ङ) सर्वं विहाय विद्याधिकारं कुरु। | |
| 2. | अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं, विभिक्तं वचनञ्च लिखत- | |

पदानि लिङ्गम् विभिक्तः वचनम् नरस्य

61

रुचिरा - द्वितीयो भागः

| गुरूणाम् | *********** | ********** | ******** |
|----------|---|------------|---|
| केयूरा: | ••••• | ••••• | ************ |
| कोर्तिम् | ••••• | ••••• | *************************************** |
| भूषणानि | *************************************** | ••••• | ************* |

3. श्लोकांशान् योजयत-

क

विद्या राजसु पूज्यते न हि धनम् केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषम् न चौरहार्यं न च राजहार्यम् सत्कारायतनं कुलस्य महिमा वाण्येका समलङ्करोति पुरुषम्

एकपदेन प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

- (क) कः पशुः?
- (ख) का भोगकरी?
- (ग) के पुरुषं न विभूषयन्ति?
- (घ) का एका पुरुषं समलङ्करोति?
- (ङ) कानि क्षीयन्ते?

5. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) विद्याविहीन: नर: पशु: अस्ति।
- (ख) <u>विद्या</u> राजसु पूज्यते।

ख

हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः। न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि। या संस्कृता धार्यते। विद्या-विहीनः पशुः। रत्नैर्विना भूषणम्।

- (ग) चन्द्रोज्ज्वला: <u>हारा:</u> पुरुषं न अलङ्कुर्वन्ति।
- (घ) <u>पिता</u> हिते नियुङ्क्ते।
- (ङ) विद्याधनं सर्वप्रधानं धनमस्ति।
- (च) विद्या दिक्षु कीर्तिं तनोति।

6. पूर्णवाक्येन प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

- (क) गुरूणां गुरु: का अस्ति?
- (ख) कीदृशी वाणी पुरुषं समलङ्करोति?
- (ग) व्यये कृते किं वर्धते?
- (घ) भाग्यक्षये आश्रय: क:?

7. मञ्जूषातः पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्गपदानि चित्वा लिखत-

| विद्या | धनम् संस्कृता | सततम् कुसुमम् | मूर्धजाः पशुः | गुरु: | रति: |
|--------|---------------|---------------|---|-------|------|
| | पुँल्लिङ्गम् | स्त्रीलिङ्गम् | नपुंसकलिङ्गम् | | |
| यथा- | हारा: | अलङ्कता | भूषणम् | | |
| | ••••• | ••••• | *************************************** | | |
| | •••••• | ••••• | *************************************** | | |
| | | ••••• | ****** | | |